Roll No. : ..... Total Pages : 6

1641-R

Ist Year Arts Examination, 2018

SANSKRIT

Paper – I

(काव्य, नाटक एवं प्रायोगिक व्याकरण)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

(खण्ड-अ) [Marks : 20]

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड-ब) [Marks : 50]

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड-स) [Marks : 30]

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. निम्नलिखित सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(इकाई–I)

(i) भर्तृहरि ने किसे साक्षात्-पशु कहा है ?

(ii) विद्वानों की सभा में मौन किसका आभूषण है ?

(इकाई–II)

(iii) नीतिकारमतानुसार सज्जनों के स्वाभाविक गुण क्या-क्या हैं ?

(iv) ''न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः'' उक्ति की व्याख्या कीजिए।

(इकाई–III)

(v) वसन्तक कौन था ?

(vi) 'स्त्रीस्वभावस्तु कातरः' उक्ति का अर्थ एवं किसने कही स्पष्ट कीजिए ?

(इकाई–IV)

(vii) 'षोडशान्तः पुरज्येष्ठा' किसे कहा गया है ?

(viii) स्वप्नवासवदत्तम् में स्वप्न की घटना किस अंक में है ?

(इकाई–V)

(ix) 'दर्शनीयः' में प्रकृति-प्रत्यय बताइये।

(x) 'छायेव' में संधि-विच्छेद एवं संधि का नाम बताइये।

खण्ड-ब

(इकाई–I)

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

स्वायत्तमेकान्तहितं विधात्रा विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
विशेषतः सर्वविदा समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।।

(अथवा)

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण, लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्ध परार्ध भिन्ना, छायेव मैत्री खल-सज्जनानाम्।।

(इकाई–II)

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा,
सदसि वाक्पटुता युधिः विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।

(अथवा)

निन्दतु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
व्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

(इकाई–III)

4. सप्रसंग में व्याख्या कीजिये :

पुर्वं त्वयाप्यभिमतं गतमेवमासी–
च्छलाघ्यं गमिष्यसि पुनर्विजयेन भर्तुः।
कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना,
चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः।

(अथवा)

दुःखं त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः,
स्मृत्वा स्मृत्वा याति दुःखं नवत्वम्।
यात्रा त्वेषा यद् विमुच्येह वाष्पं,
प्राप्तानृण्या याति बुद्धिः प्रसादम्।।

(इकाई–IV)

5. सप्रसंग संस्कृत व्याख्या कीजिये :

रूपश्रिया समुदितां गुणतश्च युक्तां, लब्ध्वा प्रियां मम तु मन्द इवाद्य शोकः।
पूर्वाभिघातसरुजोऽप्यनुभूतदुःखः, पद्मावतीमपि तथैव समर्थयामि।।

(अथवा)

कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले, रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।
एवं लोकास्तुल्यधर्मो वनानां, काले-काले छिद्यते रुह्यते च।।

(इकाई–V)

6. प्रश्न संख्या 2(दो) में किसी एक श्लोक में प्रयुक्त पदों के आधार पर संधि, समास, प्रकृति-प्रत्यय विषयक व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिए।

(अथवा)

प्रश्न संख्या 4(चार) में किसी एक श्लोक में प्रयुक्त पदों के आधार पर संधि, समास, प्रकृति-प्रत्यय विषयक व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिए।

खण्ड-स

(इकाई–I)

7. नीतिशतक के आधार पर विद्वत् प्रशंसा को स्पष्ट कीजिए।

(इकाई–II)

8. नीतिशतक के आधार पर परोपकार की महिमा को सिद्ध कीजिए।

(इकाई–III)

9. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के आधार पर पद्मावती का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(इकाई–IV)

10. स्वप्नवासवदत्तम् के पंचम सर्ग का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(इकाई–V)

11. प्रश्न संख्या 5(पांच) के श्लोक में प्रयुक्त पदों के आधार पर संधि, समास, प्रकृति–प्रत्यय विषयक व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिए।